देवभूमि

विजया लक्ष्मी शर्मा

सरल कवित कीरति विमल सारे आदरहि सुजान ।
सहज बयर बिसराई रिपु जो सुनि करहिं बखान ।।

देवभूमि

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-93-6026-636-3

Price: ₹ 260.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

देवभूमि

विजया लक्ष्मी शर्मा

पुस्तक के बारे में

''देवभूमि'' मेरी जन्मभूमि - महान भारत भूमि को सादर स्पर्श करती भावनाएँ, अपने देशवासियों एवं देश के रक्षकों को समर्पित है।

यह कहानी स्वयं ही मस्तिष्क से निकलकर कलम के द्वारा रुप बनाती गई, जो मेरे अन्दर के भावों को उजागर करती, बरसों से किसी न किसी रूप में मेरी कविताओं, कहानियों या ग़ज़लों के रूप से एकसार न हो सकी थी, सो एक अलग रूप पा गई।

इसकी प्रेरणा शायद अपने पूज्य पिताजी-माताजी के आशीर्वाद से उनके संस्कार से एवं कुछ आदर्शों से प्राप्त हुई है। बाकी ईश्वर की कृपा, भगवती का आशीर्वाद और करोड़ों मुझसे अधिक भाव प्रकट करने वालों की भावनाओं से कहानी का जन्म हुआ है।

देवभूमि

''दूसरों की शक्ति की प्रतीक्षा करने वाले,
प्रतीक्षा में ही रह जाते हैं.....''

''नव निर्माण तभी होता है जब प्राचीन नष्ट होता है -
पर समय से पूर्व उसकी समाप्ति हानिकारक ही नहीं
मानवता का हनन भी है।''

– विजया लक्ष्मी शर्मा

1 देवभूमि

संध्याकालीन शीतल हवा नदी की लहरों को छूकर और शीतल हो जाती थी। चम्पा, चमेली के पुष्पों की शीतल सुगन्धित वायु उस पूरे वातावरण को नशीला बना रही थी। पुष्प मानों हवा के छूने से छुईमुई के समान शर्म से सिमटकर बिखर जाते थे। दूर तक फूलों की एक चादर सी बिछ गई थी।

सूर्यास्त की लालिमा उस दृश्य को और मधुरिम बना रही थी। विहंगों का मधुर कलरव मानो संगीतमय हो, सरगम की तानें छेड़ रहा था। खग–मृग इधर–उधर दौड़ रहे थे। जीव–जन्तुओं का नदी तट पर प्यास शीतल करना, सारसों, बत्तखों का तरंगिनी की सतह पर अठखेलियाँ करना, बत्तखों के झुण्ड, हँसों का एक श्वेत पंक्ति में तैरना, अलौकिक दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे। कोयलें आम्र के पत्तों व बौर में छिपी अपनी मधुर ध्वनि में कूक रही थीं, कहीं रंग–बिरंगी पंखुड़ियों की चादर, कहीं घास की बिछी हरी चादर, वसुन्धरा के सौंदर्य को अनुपम बना रही थी। नन्हें–नन्हें पीले–पीले पुष्प, हरे पौधों पर भंवरों को आकर्षित कर रहे थे। तितलियाँ मानो नृत्य करते–करते थक गई थीं। अलौकिक वातावरण में आनन्द था। ऐसे में एक नाव उस पार से इस पार आ रही थी। नाविक मग्न हो गीत गुनगुना रहा था मगर धीमे–धीमे। उसकी नाव राजकुमारी वसुन्धरा को ला रही थी। संग उनकी मुँह–लगी सखियाँ देवभूमि की थीं। पशु–पक्षी सब पानी की कल–कल ध्वनि में खलल पड़ते देख उधर देखने लगे। उनका विचरण रूक गया था, तभी उन्होंने वसुन्धरा के

खिलखिलाने की आवाज सुनी, जैसे पहचान रहे हों, फिर अपने–अपने कार्य में निडर हो मग्न हो गए।

नाव किनारे पर लगते ही पुष्पा और चमेली दौड़कर उतरीं और अपने–अपने हाथ आगे बढ़ाकर राजकुमारी वसुन्धरा को थामने का प्रयत्न किया। राजकुमारी वसुन्धरा ने लहराकर मुख उधर किया और लगा चाँद मानो धरती पर उतर आया हो। लम्बे लहराते केशों ने गोरे से मुखड़े को समेटा था। मृगनयन सी मोटी–मोटी आँखें चंचलता से मुस्कुरा रही थीं। रस भरे होंठ गुलाब की पंखुड़ियों से नाजुक थे। माथे पर स्वर्ण–बिंदी, कमर की स्वर्ण–करधनी श्वेत परिधान में सजी, श्वेत पुष्पों के गजरों–आभूषणों में पुष्पों को गूँथा गया था। वह श्वेत चाँदनी में नहाई अप्सरा लग रही थी। पाँवों की स्वर्ण पायल उसके सौन्दर्य को अनुपम बना रही थी। नाक पर हीरे की लौंग मानों छोटा–सा तारा हो। खग–मृग सुध–बुध खो उसे देखने लगे। चम्पा ने राजकुमारी वसुन्धरा की चुनरी संभाली।

राजकुमारी : ''कहीं देर तो नहीं हो गई, गुरुवर कुटिया से प्रस्थान तो नहीं कर गये?''
राजकुमारी ने खनकती ध्वनि में पूछा, मानो सहस्त्रों तार झनझना उठे हों।

पुष्पा : ''जी नहीं राजकुमारी, अभी गुरुजी वहीं होंगे, साँझ ढलने में समय है।'' पुष्पा ने मार्ग को देखते हुए कहा। कहीं मार्ग में इन स्वयं की बिछाई गई पुष्पों या हरी धूप की चादर में गलती से कोई कंकड़ न आ गया हो। धीमे–धीमे चाँदी की जूती में पावों को सहेज, कदमों को रखती, मानो कहीं हल्का सा भार न पड़ जाये।
राजकुमारी हथिनी की मस्त चाल से चली आ रही थी। चमेली चुनरी थामे चम्पा के साथ चलने लगी। चाँदी की जूती में सोने की तारों का जाल बना था और सोने के घुँघरू लगे थे जो हर उठते कदम पर बज उठते थे। एक तराशी मूरत की तरह असीम सौन्दर्य को समेटे चली आ रही राजकुमारी सबको आकर्षित कर रही थी।
कुटिया से बीस गज की दूरी पर एक अलौकिक शान्ति थी और उस शान्ति में 'ऊँ' 'ऊँ' की

ध्वनि उस वातावरण को पवित्र बना रही थी। तुलसी के पौधे और गेंदे के पुष्पों से लदे पौधे पवित्र वातावरण की सुगन्ध को भी पवित्र बना रहे थे।

आचार्य बृहस्पति का आश्रम था। अन्दर कदम रखते ही सरस्वती की मूर्ति जो एक उच्च स्थल पर पीपल के वृक्ष के पास विराजमान थी, अपनी मुस्कुराहट बिखेर रही थी। वीणा हाथों में लिए हँस पे सवार माँ सरस्वती को राजकुमारी वसुन्धरा ने प्रणाम किया। कुछ शिष्यगण मंत्र पढ़ रहे थे, एक कोने में हवन स्थल था और कुछ हवन कर रहे थे। कुछ लकड़ियाँ बटोर लाए थे, सहेज रहे थे। हवन से सुगन्धित वायु मानो प्राणों में जान डाल रही थी। अपने कक्ष में आचार्य बृहस्पति विचारमग्न हो सामने अस्त होते सूर्य को देख रहे थे। वेद–मंत्रोच्चार हो रहा था तभी उनके शिष्य कल्पदीप ने उनकी तंद्रा भंग कर दी।

कल्पदीप : ''गुरूवर, राजकुमारी वसुन्धरा पधारी हैं।''

आचार्य : ''एकान्त!'' गुरूवर के इस शब्द के पश्चात् कक्ष खाली हो गया।

राजकुमारी : ''प्रणाम गुरुवर!'' राजकुमारी ने कक्ष में भीतर प्रवेश करते हुए कहा। उन्होंने सामने आसन पर स्थान ग्रहण किया। पुष्पा व चमेली भी पीछे ही बैठ गईं।

आचार्य : ''यदि तुम दोनों कुछ शीतल वायु का आनन्द ले लो तो अच्छा होगा।'' बिना नेत्र खोले आचार्य ने कहा।

पुष्पा व चमेली : ''जो आज्ञा गुरुवर!'' दोनों प्रणाम कर बाहर निकल गईं।

राजकुमारी वसुन्धरा ने प्रश्नवाचक दृष्टि आचार्य के मुख की ओर करी। उनकी पलकें उनके नेत्रों की आशंका स्पष्ट रूप से प्रकट कर रही थी। वे उठ गईं थी।

आचार्य : ''घबराओ नहीं, यहाँ बुलाने का यह तात्पर्य कदापि नहीं कि कुछ अनहोनी हो गई है, परन्तु गम्भीर विषय है कि कुछ नियति में बदा है जो

होकर ही रहेगा और विडम्बना यह है कि मेरे प्रस्थान का समय हो गया है। अब छः माह तक कैलाश पर्वत पर तप का समय है।''

राजकुमारी : ''कैसी अनहोनी होने वाली है?'' राजकुमारी चिन्तित हो उठी थी।

आचार्य : ''सुनकर विचलित हो उठने वाली यह राजकुमारी हमारी शिष्या वसुन्धरा नहीं है। यह तो हमें निराश कर देगी।''

राजकुमारी : ''क्षमा गुरुवर कहिये।'' राजकुमारी का आत्मविश्वास वापस आ गया था।

आचार्य : ''भाग्य अपना खेल खेलने वाला है और पुत्री कष्ट तुम्हें भी सहना है, परन्तु विपरीत परिस्थितियों में धर्म, कर्म, सत्य पर चलते हुए भाग्यानुकूल हो, स्वयं को एवं अन्य को संभाला जा सकता है। भाग्य बदला नहीं जा सकता, पर बहादुरी से उसे अपने रूप में ढाल सकते हैं।''

राजकुमारी : ''यह क्या पहेली है आचार्य'' स्वर में कंपन था।

आचार्य : ''यह भविष्यवाणी का अर्थ है जो मैं कह रहा हूँ, तुम्हारा आने वाला सुखद भविष्य तुम्हारे व राज्य के लिए अत्यन्त कष्टप्रद होगा, परन्तु तुम्हारे तप व बलिदान से ये राज्य बचेगा।''

राजकुमारी : ''आचार्य स्पष्ट कहिए।''

आचार्य : ''संकेत कर रहा हूँ राजकुमारी, कल हमें यही भविष्यवाणी सुनाई दी थी। ये वर्ष तुम्हारी परीक्षा का है, मैं मार्गदर्शन कर रहा हूँ जो कुछ भी होगा धैर्य मत खोना, स्वयं को असहाय मत समझना। मेरी शिक्षा व शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद तुम्हें हर कठिनाई से पार लगाएगा।''

राजकुमारी : ''आचार्य'' उसकी आवाज़ भर्रा गई थी, नेत्रों में दो बूँदें चमक उठीं थी।

आचार्य : ''पुत्री, तुम वीरपुत्री हो। ब्रह्मदेव की अनुचरणी हो, ये व्यर्थ चिन्ता क्यों? वीर कन्याएँ कभी नहीं रोतीं। आँसू कायरता की निशानी हैं, बहें तो पोंछ दो।''

राजकुमारी : ''जी गुरुवर!'' वो संभल गई, अंगुलियों से आँसू पोंछ दिए।

आचार्य : ''ये लो!'' आचार्य ने अपने हाथ से एक अंगूठी उतारकर वसुन्धरा को दी।

''ये अत्यन्त विषम परिस्थिति में हमें तुम्हारे सम्मुख उपस्थित होने पर बाध्य कर देगी। केवल अपने नेत्रों को इस पर केन्द्रित करना, हम दिखाई देंगे, मगर ध्यान रहे केवल विषम परिस्थितियों में।''

राजकुमारी ने ''ऊँ'' का उच्चारण कर वो अँगूठी ग्रहण कर ली। दोनों हाथों से अँगूठी संभाल माथे पर लगा, गुरूवर को हाथ जोड़ प्रणाम कर राजकुमारी बाहर निकल आई। नेत्रों की चमक का स्थान विषाद की रेखाओं ने ले लिया था।

पुष्पा व चमेली : ''चिन्ता का विषय जान सकती हैं राजकुमारी जी!''

राजकुमारी : ''भाग्य, पुष्पा भाग्य!'' धीमे स्वर में कहकर राजकुमारी नाव की तरफ बढ़ गई। नाव चल पड़ी। लेकिन अब नाव में वो पहली सी शोखियाँ, मदभरे कहकहे कुछ भी न थे। राजकुमारी की सखियाँ उससे कुछ पूछ नहीं रही थीं परन्तु उनको ये समझ आ गया था कि कुछ ऐसा है जो राजकुमारी को कष्ट दे रहा है।

उधर राजकुमारी का मस्तिष्क तीव्र गति से किसी अन्जानी आशंका से आशंकित हो तरह–तरह के चित्र बना रहा था। वो सोच रही थी कि गरुवर का बुलावा व उन्हें सचेत करना, तत्पश्चात् उनके द्वारा कहे गये वाक्य क्या अब उन्हें चैन से रहने देंगे। राजकुमारी के मस्तक पर पड़ती रेखाएँ गहरी होने लगी थीं। अब कल–कल करता जल और उस पर अठखेलियाँ करते पक्षी उन्हें न भाते थे। अन्ततः वो तट तक पहुँच गये थे। चम्पा, चमेली का हाथ थाम वो किले की तरफ हो ली। मार्ग में वो चुप रही। रात्रि प्रारम्भ होने जा रही थी। किले के अन्दर रहने वाले बाहर जा रहे थे। गाय, भैंस चरा कर लाये लोग अपने–अपने घरों में व्यस्त थे। कुछ पथ पर गुनगुनाते जा रहे थे कुछ धीमे–धीमे।

किले तक पहुँचने का मार्ग राजकुमारी का भिन्न था। पशु भी विश्राम करते प्रतीत हो रहे थे। किले में प्रवेश करते ही सेनापति गोवर्धन सामने से आते दिखाई दिए।

से.गोवर्धन : ''राजकुमारी वसुन्धरा, आप पालकी में क्यों नहीं गई?''

राजकुमारी : ''प्रणाम आर्यवर, पालकी की आवश्यकता नहीं थी।''

सेनापति : ''दीर्घायु भव, आप कहाँ भ्रमण को गई थीं?''

राजकुमारी : ''आचार्य जी के आश्रम में, पिताश्री महाराज कहाँ हैं?''

सेनापति : ''विश्राम गृह में प्रवेश कर गये हैं। मैं वहीं से आया हूँ, परन्तु प्रहरी को आदेश है आपके आते ही आपको उन तक तत्काल पहुँचा दिया जाए।''

राजकुमारी : ''जो आज्ञा आर्यवर, अभी वस्त्र बदलकर मैं पिताश्री महाराज के कक्ष में उपस्थित होऊँगी।'' राजकुमारी हाथ जोड़कर नमन करती है फिर अपने कक्ष की ओर प्रस्थान करती है।

राजकुमारी : ''कक्ष में आज अन्धकार प्रतीत हो रहा है, क्या पूरे दीपक प्रज्जवलित नहीं हुए? हाँ पुष्पा जाओ शीघ्र और महाराज को संदेश दे दो कि हम आ गये हैं और अभी उनके सम्मुख उपस्थित होंगे।''

पूरा कक्ष भीनी–भीनी सुगन्ध से भरा था। झीना पर्दा राजकुमारी के पलंग को बाकी कक्ष से अलग कर रहा था। कक्ष दीप्तिमान हो उठा। चमेली व चम्पा राजकुमारी के वस्त्र बदलवाने तथा आभूषण उतारने में मदद कर रही थी, तब तक अन्य परिचारिकाएँ कक्ष से लगते सरोवर में जो विशेषकर राजकुमारी के लिए बनाया गया था, राजकुमारी के स्नान की तैयारी में लग गई।

लकड़ी का तख्ता उस पर बाँस को लगा बनाई गई ऊपर छत तथा पक्के बने सरोवर को देखने के लिए बाँस के जाल थे। सूर्य की रोशनी वहाँ से छनकर प्रातः जब प्रवेश करती तो राजकुमारी

वहाँ लेट उन किरणों का स्नान करती, फिर वहीं नीचे से सरोवर का जल उन्हें शीतलता भी देता। राजकुमारी धीरे–धीरे सरोवर की ओर लकड़ी की सीढ़ियों से उतरती बड़ी। सरोवर में पहुँचते ही परिचारिकाओं ने दूध व चन्दन का उबटन मलना प्रारम्भ कर दिया। जल में गुलाब जल तथा गुलाब का इत्र छिड़कती जाती। राजकुमारी जल–क्रीड़ा में सखियों सहित मग्न हो गई। सरोवर में बनाए गए जल कुंड में गुलाब की पंखुड़ियाँ भरी पड़ी थी। दुग्ध के पात्र पास पड़े थे और राजकुमारी को दुग्ध से स्नान कराया जा रहा था। कुछ क्षण पश्चात् राजकुमारी शीतल जल से स्नान कर, जो कुंड के दूसरे भाग में था बाहर निकली। एक जगह एक कुंडीनुमा नल को घुमा दिया गया, सारा जल धीमे–धीमे बाहर निकल गया। जल के इस निकास के साथ ही दूसरा स्वच्छ जल फिर सरोवर में एक सीमा तक भर गया। राज्य के कुशल कारीगरों द्वारा ऐसे ही सरोवरों का निर्माण किया गया था जो विशेष कक्षों से जुड़े थे। कक्ष में प्रवेश कर राजकुमारी के वस्त्र बदल दिये गये। कुछ परिचारिकाएँ साज़ पकड़ गीत गुनगुना रही थीं। सितार के तार झनझना उठे थे, वीणा बजाती मधुर स्वर में धीमे–धीमे गीत गाती परिचारिकाएँ राजकुमारी के श्रृंगार को मानो गति दे रही हों। रात्रि के लिए वस्त्र पहन और कुछ ही आभूषणों से सजकर जब राजकुमारी उठी तो आईने में स्वयं को देख मुग्ध हो गई। स्नान के पश्चात् रूप निखर आया था। घने काले केशों से पड़ती जल की बूँदें टपक कर गालों पर पड़ती तो मोती प्रतीत होतीं।

पुष्पा : ''राजकुमारी जी आरती की थाली तैयार है।'' पुष्पा ने थाली को हाथ में पकड़ा था।

राजकुमारी : ''चलें, देवालय हो आयें।''

राजकुमारी ने थाली को हाथ जोड़कर नमस्कार करा। थाली में सातमुखी दीपक घी के जल रहे

थे। पुष्प–कपूर चंदन के हार लिए वे सब चल पड़ीं। मन्दिर तक जाने में एक कोस चलना था पर आज राजकुमारी का मन अशान्त था, सो वो दूरी उन्हें भारी सी प्रतीत हो रही थी। महाराज–महारानी तो पहुँच गई होंगी, यह सोचती वह शान्त चल रहीं थीं।

मन्दिर के विशाल प्रांगण में प्रवेश करते ही राजकुमारी की दृष्टि सूर्यदेव की विराट प्रतिमा पर पड़ी जो मुख्य द्वार पर थी। एक द्वार से राज–परिवार के सदस्य प्रवेश करते थे बाकी द्वारों से अन्य। अन्दर ब्रह्मा, विष्णु महेश की विराट प्रतिमाएँ थीं। पाँच सौ खम्भे धातु के बने थे, जिन पर देवी या देवता की मूर्ति थी। कुछ पर अप्सराएँ नृत्य करती चित्रित थीं। काली धातु के खम्भे विशाल छत की तरफ मुँह कर खड़े थे और उन पर दीपक रखे थे जो उस समय जल रहे थे। हर मूर्ति सोने से बनी थी और हीरे–जवाहरातों से जड़ी थी।

महाराज महाराव एवं महारानी ऐश्वर्या अपने सेनापति व अनुचरों के साथ प्रवेश कर गए थे, राजकुमार एवं उनके परिवार सब वहीं थे। अन्य मंत्रीगण एवं उनके परिवार आरती के लिए उपस्थित थे।

महाराज–महारानी–राजकुमारी ने आरती की थलियाँ बागे बढ़ा दीं। पुजारी धर्माकान्त ने शंख बजाया, उसके बजते ही घंटे व घड़ियाल बजने लगे। पूरे राज्य तक आवाज जाती थी। सब अपने–अपने घरों में आरती करने लगे। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो देवता स्वयं वहीं प्रकट हो गये हों। इतने पावन दृश्य में सब ईश्वर ध्यान में मग्न थे। राजकुमारी एकटक भगवान विष्णु की मूर्ति की ओर देख रही थी, जो मानो पूछ रही हों ''भयभीत हो गई।''

''नहीं–नहीं'' राजकुमारी स्वयं बोल पड़ी। आरती समाप्त हो चुकी थी। विशाल मन्दिर की परिक्रमा केवल मुख्य मन्दिर की परिक्रमा कर सम्पूर्ण मानी जाती। प्रसाद चढ़ाया गया,

चरणामृत बांटा गया। धीरे–धीरे सब अपने कक्षों की ओर चल पड़े।

महाराज : ''वसुन्धरा''

राजकुमारी : ''जी पिताश्री''

महाराज : ''हम अपने कक्ष में तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे।''

राजकुमारी : ''जी पिताजी''

राजकुमारी ने आरती की थाली पुष्पा को पकड़ाई और स्वयं चम्पा व चमेली के साथ महाराज के संग हो ली।

महाराज : ''बैठो पुत्री'' वो सामने पलंग पर बैठ गए। राजकुमारी ने प्रश्नवाचक दृष्टि महाराज पर डाली और सामने बिछे मखमल के आसन पर पधारी। उनकी ह्रदय गति तेजी से धड़क रही थी।

महाराज : ''आप वीर पुत्री हैं, हमारी ह्रदय की धड़कन है। आर्य पुत्री, हमारे नेत्रों को शीतलता प्रदान करने वाली चाँदनी हो आप, परन्तु एक पुत्री को वर भी वैसा ही बहादुर मिले यह हर माता–पिता की इच्छा होती है।''

महाराज के विराम लेने पर राजकुमारी ने निःश्वास छोड़ा, थोड़ा धीरज मिला, वह सोच रहीं थी क्या हो सकता है, क्यूं महाराज ने बुलाया है ?

''राजा द्रोण ने अपने सूर्यवंशी राजकुमार को आपके योग्य माना है। हमारी राजकुमारी भाग्यशाली है जो वीर राजकुमार को अपना वर मान सकती है, परन्तु यदि आप अन्य वर चुनना चाहें तो स्वतंत्र हैं।''

राजकुमारी : ''जी नहीं पिताजी महाराज यदि आप यही उचित समझते हैं तो हमें इन्कार नहीं।''

महाराज : ''अति उत्तम, वो सूर्य के तेज सा दीप्त चेहरा, असीम बाहुबल लिए, सिंह की गर्जन वाला, धनुर्विद्या में निपुण, काव्य प्रेमी, कलाप्रेमी ब्रह्मा की कृपा से अत्यन्त भाग्यशाली है।''

राजकुमारी : ''क्षमा कीजिए पिताजी महाराज, आज्ञा हो तो मैं चलूँ'' राजकुमारी सकुचाकर बोली।

महाराज : ''ठीक है चलिए, हम उनका प्रस्ताव स्वीकृत कर

देवभूमि

"देवभूमि" मेरी जन्मभूमि – महान भारत भूमि को सादर स्पर्श करती भावनाएँ, अपने देशवासियों एवं देश के रक्षकों को समर्पित हैं।

यह कहानी स्वयं ही मस्तिष्क से निकल कर कलम के द्वारा रूप बनाती गई जो मेरे अन्दर के भावों को उजागर करती – करती बरसों से किसी न किसी रूप में मेरी कविताओं, कहानियों या गजलों के रूप से एकसार न हो सकी थी सो एक अलग रूप पा गई।

लेखक से संपर्क हेतु:
vijaylakshmi06@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-93-6026-636-3
9 789360 266363